अपनी खबर - पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'

'अपनी खबर' पांडेय बेचन शर्मा उग्र की सन् १९६० में प्रकाशित हिन्दी की एक विशिष्ट आत्मकथा है। लेखक अपनी आत्मकथा के पंद्रह आध्यायों में अपने जीवन के इक्कीस वर्षो की कथा कहते है। इस आत्मकथा के माध्यम से लेखक ने अपने तथा ओरो के सही रूप को पहचानने की कोशिश की है। लेखक मनुष्य और मनुष्य के भीतर छिये पशु को भी पहचानना चाहता है।

बेचन का व्यक्तित्व हिन्दी साहित्य में नग्न यथार्थ चित्रण एवं विशिष्ट शैली के कारण विवाद का विषय रहा। इनके साहित्य को घासलेटी कहकर कुछ लोगों ने आन्दोलन भी चलाया था। उग्र ने अपने स्वभाववश इस विरोध को महत्व नहीं दिया।

उग्र के जीवन में दु:ख जन्म से ही आरम्भ होता है। इनके एक दर्जन भाई बहनों में

से कुछ तो जन्मते ही मर जाते या कुछ की जन्म के बाद मृत्यु हो जाती। अपने जन्म के समय परिवार में आनंद नहीं था एवं जन्मते ही बेच दिये जाने की कथा को वे इस प्रकार कहते हैं–'मैं कहीं दिवंगत अंग्रेजों की राह न लगूँ। अत: तय यह पाया कि पहले तो मेरी जन्म-कुण्डली न बनायी जाय, साथ ही जन्मते ही मुझे बेच दिया जाय।' सो जन्मते ही मुझे यारों ने बेच डाला और किस किमत पर ? महज टके पर एक। उसका भी गुड़ मँगा कर मेरी माँ ने खा लिया था। अपने पल्ले उस टके में से एक छदाम नहीं पड़ा था, जो मेरे जीवन का सम्पूर्ण दाम था। अलबत्ता 'जन्मजात बिका' का बिल्ला-जैसा नाम तौक की तरह गले मढा गया, बेचन।

उग्र को बचपन में पिता की मृत्यु और गरीबी के कारण अनेक संकटों का सामना करना पड़ा। बड़े भाई के अत्याचार से तंग मझले भाई के साथ रामलीला मंडली में शामिल हो गये। इस मंडली के बुरे कामों को निकट से देखा। बचपन में ही आदर्शों को इसे एवं मंडली में व्यभिचार को भड़ते भी देखा था। ऐसे व्यभिचारी परिवेश में रहकर वे भी कम उम्र में ही इश्क करने लगे थे। बारह वर्ष की उम्र में सत्रह वर्ष की सुन्दर लड़की से प्यार करने लगे थे। वे अपनी आत्मकथा में लिखते है—मेरा ख्याल है, इश्क क्या है इसका पता मुझे मण्डली में बारह साल की वय में लग गया था। बारह साल की उम्र में मैं सत्रह साल की एक अभिरामा श्यामा पर आशिक हो गया था कि सीने में जैसे कोई दिल को मला करे है का अनुभव मुझे तभी हो गया था।

ब्राह्मणों के घर में पैदा होने पर भी उग्र अपने को शूद्र घोषित करते है । अपने को शूद्र कहना एवं ब्राह्मण होने का विरोध इस बात को स्पष्ट करता है कि उन्होंने ब्राह्मणों के कुल में बूरे काम होते देखे थे । वे लिखते हैं–

''मैं यह कहना चाहता था कि आज भी मैं निस्संकोच शूद्र हूँ और ब्राह्मणों के घर में पैदा होने के सबब साधारण नहीं असाधारण शूद्र हूँ

हिन्दी साहित्य में लेखक ने जीवन की शुरूआत 'उग्र' उपनाम से की । अंग्रेज हुकूमत के सामने अपने विरोध को उग्र नाम से सूचित किया । उग्र की रचनाओं में विद्रोह की

चिनगारिया थी परन्तु व्यवहारिक स्तर पर कायर थे एवं इस कमजोरी का स्वीकार भी करते थे । वे अपनी आत्मकथा में लिखते है –

"कलम से लिखकर रिश्क लेना हो तो (कायर होते हुए भी) शहीदों का पीछा में काले कोसों तक न छोड़ूँ। कलम से मारना हो तो सारे विश्व के अनाचारियाँ को बिना नरक भेजे मैं न मानूँ लेकिन बन्दूक तलवार से प्राण लेना हो तो वह मेरे सेवा नहीं ।

उग्र की इस आत्मकथा के विषय में पंकज चतुर्वेदी का कहना है कि–"मेरी समझ से अपनी खबर का सबसे ज्यादा महत्व यह देखने में है कि कैसे-कैसे अपनी जिन्दगी के अभावों तथा अपने परिवेश की विसंगतियों से घिरा और उनसे उबरने की छरपटाहाट से भरा हुआ मनुष्य अपने व्यक्तित्व का सकारात्मक विकास करता चलता है । यह कितना मुश्किल और आश्चर्यजनक, दिलचस्प और मार्मिक एक साथ है । इस आत्मकथा के विशेष संदर्भ में मैं इसे जीवन का सनसनीखेज सौन्दर्य कहना चाहूँगा ।

अपने जीवन के सत्य को कहने के साहस के अभाव में हिन्दी साहित्य में आत्मकथा की समृद्ध परम्परा नहीं मिलती । उग्र की आत्मकथा इस साहस का परिणाम है । हास्य-व्यंग्य से युक्त विशिष्ट शैली में लिखी गई हिन्दी की सशक्त आत्मकथा है ।